''तुम्हारा मन व्याकुल न हो''

(14:1-31)

सांत्वना की आवश्यकता हर किसी को होती है। कुछ वर्ष पूर्व पुराने मिशनरी ओटिस और आइरीन गेटवुड कुछ दिन के लिए हमारे घर में रहे। वे अपने साथ एक जर्मन महिला को भी लाए थे जो बहुत कम अंग्रेज़ी बोलती थी। जब हम उस महिला को उसके सोने का कमरा दिखाने के लिए ले गए, तो उसने पर्दे हटाने के लिए कहा। फिर उसने खिड़कियां खोलने के लिए कहा। हमें यह अजीब लगा, क्योंकि बाहर बहुत ठण्ड थी, परन्तु हमने प्रसन्नतापूर्वक जैसा वह चाहती थी, किया। अगले दिन गेटवुड दम्पत्ति ने हमें बताया कि उस महिला ने ऐसी असाधारण बिनती क्यों की थी। जर्मनी में द्वितीय विश्वयुद्ध के अंतिम दिनों में, जर्मन और रूसी सेनाओं में उस इलाके में जहां वह महिला रहती थी, भीषण युद्ध चल रहा था। लगभग एक माह से भी अधिक जिस घर में वह अंधेरे में, बिना खिड़की के तहखाने में, अपने नवजात बच्चे की देखभाल करते हुए रह रही थी, उसके ऊपर से तोप के गोले बरसते रहते थे। यह बहुत ही मुश्किल भरा समय था, वह महिला व उसका बच्चा उस दौरान कई दिन तक भूख से तड़पते रहे थे। अन्त में युद्ध समाप्त होने पर, वह महिला छिपने के अपने भूमिगत स्थान से बच निकलने में सफल रही थी। तब से वह महिला कभी भी अंधेरे, घुटन भरे व बिना खिड़की के कमरे में रहना बिल्कुल पसन्द नहीं करती थी! इस कठिन परिस्थिति में उसने अपने बच्चे को सांत्वना देते हुए एक महीना बिताया था और अब स्वयं उसे भी सांत्वना की आवश्यकता थी। हम सबको सांत्वना की आवश्यकता होती है।

यूहन्ना 14 अध्याय में अपने चेलों को यीशु का सांत्वना भरा संदेश इन शब्दों से आरम्भ होता है, ''तुम्हारा मन व्याकुल न हो'' (यूहन्ना 14:1क)। अध्याय 13 की घटनाओं और भविष्यवाणियों के बाद ऐसे ही संदेश की आवश्यकता थी। यहूदा यीशु को पकड़वाने के लिए जा चुका था, पतरस ने उसी रात यीशु का इन्कार करना था और क्रूस पर चढ़ने का समय और निकट आता जा रहा था। मानवीय परिप्रेक्ष्य से, सब कुछ ''एक एक करके'' आता गया। अध्याय 14 के अन्त के निकट यीशु ने इन शब्दों को दोहराते हुए कहा,

''तुम्हारा मन न घबराए और न डरे'' (आयत 27)। उन दो ''पुस्तकाश्रयों'' के बीच की आयतों में यीशु की सांत्वना देने वाली शिक्षा है जिसमें उसने और उसके चेलों ने अपना सबसे कठिन समय मिलकर बिताया था। इन शिक्षाओं से प्रेरितों को ''विश्वास के सफ़र'' में आगे बढ़ने में सहायता मिली और आज उनसे हमें अपने विश्वास की यात्रा में सहायता मिल सकती है।

''व्याकुल'' शब्द का इस्तेमाल यीशु ऐसे सांत्वनापूर्ण ढंग से करता है कि यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। यूहन्ना रचित सुसमाचार में तीन अन्य स्थानों पर, ''व्याकुल'' शब्द स्वयं यीशु की स्थिति बताता है:

> जब यीशु ने उस [मरियम] को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ, और घबरा कर कहा है? (11:33)।
>
> अब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिए अब मैं क्या कहूं? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं (यूहन्ना 12:27)।
>
> ये बातें कहकर यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ और यह गवाही दी, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा (यूहन्ना 13:21)।

निराशा में व्याकुल होना एक स्वाभाविक और अपेक्षित स्थिति है। हम व्याकुल तब होते हैं जब जीवन में कुछ गलत होता है। यीशु के लिए निश्चय ही यदि व्याकुल होने का कोई समय था तो वह वह दिन था जब उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था। यीशु ने इस घटना के लिए अपने चेलों को भरोसा रखने (14:1) के लिए कहकर और उन्हें कुछ विशेष शक्ति देकर तैयार किया था।

कल्पना करने का स्थान (14:2, 3)

ये बातें कहने के थोड़ी देर बाद, यीशु को गिरफ्तार करने के लिए सिपाही उसे चेलों के पास से खींचकर ले गए (8:1–12)। उसकी गिरफ्तारी के बाद, चेले अकेले रह गए थे। वे अवश्य ही इस घटना से व्याकुल होंगे। बचपन से ही, अकेले छोड़े जाना हमारे लिए सबसे भयानक लगता था। अजीब बात है कि लगता नहीं कि हम में से वह भय अभी भी निकल गया हो।

डॉ. जेम्स डॉब्सन ने ''फोकस ऑन द फैमिली'' नामक अपने रेडियो कार्यक्रम में एक बार आने वाले एक विशेष अतिथि के बारे में बताया। वह एक रूसी महिला थी जिसने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नाज़ियों के एक यातना कैम्प में कई वर्ष बिताए थे। डॉब्सन के कार्यक्रम में उसने बताया कि उन वर्षों के दौरान उसने कैसे सामूहिक हत्यारों को देखा था और अभाव तथा कष्ट के हर रूप का अनुभव किया था। फिर उसने बताया कि युद्ध के बाद कैसे वह अमेरिका चली गई और वहां उसने शादी कर ली। दुख की बात यह हुई कि बाद

में उसके पति ने भी उसे छोड़ दिया। डॉब्सन को बातचीत में, उस महिला ने बताया कि विवाह के बाद ठुकराए और त्यागे जाने का कष्ट उसे जर्मन मृत्यु कैम्प में बिताए गए वर्षों से कहीं अधिक महसूस हुआ था।

अकेले होने की पीड़ा को जानते हुए, यीशु ने अपने चेलों को उनसे अपने दूर होने का समय निकट आने पर उसके बारे में विचार करने का एक नया ढंग बताया। अकेले होने पर विचार करने के बजाय, उन्हें उस समय का इंतजार करने को कहा गया था जब यीशु उनके लिए अपने पिता के घर में जगह तैयार करने जा रहा था (14:2, 3)। यीशु के शारीरिक रूप से साथ न होने पर विचार करने का यह ढंग कितना अच्छा है!

आज, समस्याओं के कारण जब हमें यह मानना पड़े कि परमेश्वर ने हमें त्यागकर अकेला छोड़ दिया है, तो हमें याद रखना चाहिए कि जब क्रूस के समय चेलों को लगा था कि वे अकेले हैं तो यीशु ने उन्हें क्या करने के लिए कहा था: हमें याद रखना चाहिए कि यीशु हमारे लिए जगह तैयार कर रहा है जहां हम परमेश्वर के साथ सदा-सदा तक रहेंगे!

ग्रहण करने की दिशा (14:4-11)

यीशु के यह कहने के बाद कि वह उनके लिए जगह तैयार करने जा रहा है, थोमा ने कहा, ''हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहां जाता है?''(14:5)। यीशु का उत्तर था, ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (14:6)। फिर एक और चेले, फिलिप्पुस ने कहा, ''हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे: यही हमारे लिए बहुत है'' (14:8)। यीशु ने, सम्भवत: मन में आह भरते हुए उत्तर दिया, ''जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है ...'' (14:9ख)। उनकी उलझन के बावजूद, यीशु ने ज़ोर देकर कहा कि उसके साथ क्रूस का कष्ट सहने की तैयारी के लिए उन्हें अपना पूरा ध्यान उसी पर लगाना होगा।

क्या हम परमेश्वर के निकट आना चाहते हैं? क्या हम उसके पास रहना चाहते हैं? हम उसके पास कैसे आ सकते हैं? यीशु ने कहा कि ''पिता के पास आने'' का मार्ग केवल वही है। क्रूस पर चढ़ाए जाने से पिछली रात भी यह बात सत्य थी और आज भी सत्य है।

मैक्स लुकेडो ने बच्चों की एक पुस्तक में[1] एक राजा के बारे में बड़ी प्रेरणा देने वाली छोटी सी कहानी बताई है। राजा ने यह तय करने के लिए कि उसकी बेटी से शादी करके उसके बाद राजा कौन बनेगा, एक मुकाबला करवाया। भाग लेने वाले तीन योद्धा थे: शूरवीर कार्लिस्ले, फुर्तीला अलोन; और बुद्धिमान कैसिडोन। उनका काम घने और ख़तरनाक हेमलौक जंगल में से गुज़रना था जिसमें होपनौट्स जंगली लोग रहते थे। समझौते के अनुसार शर्त यह थी कि राजकुमारी से उसी योद्धा का विवाह होगा जो दूसरी ओर से किले में पहले पहुंचेगा। राजा ने दिन में तीन बार अपने किले से बांसुरी की विशेष धुन बजाकर जंगल में से उनकी अगुआई करनी थी। परन्तु जब राजा उन योद्धाओं की अगुआई करने के लिए अपनी बांसुरी बजाता था, तो होपनौट्स भी यात्रियों को गुमराह करने के लिए अपनी बांसुरी से राजा की तरह ही आवाज़ निकालते थे। प्रत्येक योद्धा मार्ग में सहायता के लिए

जंगल में अपने साथ एक साथी ले जा सकता था।

ये तीनों साहसी योद्धा हेमलौक जंगल में से किले की ओर चल पड़े। अन्त में, कैसिडोन को जो ध्यान से चलता था, राजा के किले तक जाने का मार्ग पहले मिल गया। उसे यह मार्ग कैसे मिला? उसने अपने साथी के रूप में राजकुमार को चुना जो कि राजा का बेटा था। पुत्र को अपने पिता की धुन की पहचान थी और वह स्वयं भी बड़ी निपुणता से इसे बजा सकता था। मार्ग में चलते-चलते कैसिडोन ने उसके गीत की ओर ध्यान लगाए रखा। राजकुमार की धुन को सुनकर वह होपनौट्स लोगों द्वारा बजाई जाने वाली नकली धुन में अन्तर कर सकता था।

यीशु ने यह जानते हुए कि चेलों से उससे अलग कर दिए जाने पर वे उलझन में दिशाहीन और निराश हो जाएंगे, उन्हें परीक्षा की घड़ी में राह दिखाई। उन्हें उसके पदचिह्नों पर चलना चाहिए, क्योंकि पिता तक पहुंचाने के लिए केवल वही उनका विश्वसनीय अगुआ था। आज हमारे लिए यीशु का संदेश वही है। वह हमें उसकी ओर देखने और कठिन समयों में अपने पीछे चलने के लिए कहता है। सार में, वह कहता है, ''मेरे पीछे आओ! तूफ़ानों में भी, जब तुम्हें बिल्कुल दिखाई न दे, और जब कोई कारण न हो और तब भी जब बड़े संदेह में डूबे हो - अपनी सबसे कठिन घड़ी में मेरे पीछे आओ। तुम अपने आपको पिता के पास आए हुए पाओगे!''

उपस्थिति का अहसास
(14:12-14)

मेरी सबसे पसन्दीदा कहानियों में से बच्चों की कुछ कहानियां हैं जो आधी रात में अपने माता-पिता के पास आते हैं क्योंकि उन्हें अकेले सोने में डर लगता है। एक छोटी लड़की को उसके माता-पिता ने बताया था कि वह जाकर अपने बिस्तर पर आराम से सो जाए क्योंकि परमेश्वर उसे देख रहा है। सांत्वना के इन शब्दों से अप्रभावित उस लड़की ने उत्तर दिया, ''ठीक है, परन्तु आज रात मुझे अपने पास सोने के लिए कोई चाहिए!'' एक और बच्चा अपने माता-पिता के पास आकर यह कहने लगा कि उसे डर लग रहा है। उसके पिता ने उसे समझाने का प्रयास किया कि परमेश्वर उसके साथ उसके कमरे में है इसलिए डरने की कोई बात नहीं है। यह बच्चा भी समझाने के लिए शब्दों से अधिक चाहता था। उसने अपने पिता को सुझाव दिया, ''आप ऐसा क्यों नहीं करते कि जाकर परमेश्वर के साथ सो जाओ, और मुझे मम्मी के साथ सोने दें?''

अपने व्याकुल चेलों को सांत्वना देने के लिए यीशु ने तीसरा दान उनके जीवनों में अपनी निरन्तर उपस्थिति की प्रतिज्ञा देकर किया। उसने उन्हें आश्वासन दिया कि वे उसके नाम से जो भी मांगें वह करेगा और एक दिन वे उनसे भी बड़े काम करेंगे जो उन्होंने उसे करते देखा था (14:12-14)! उसकी शारीरिक अनुपस्थिति उन्हें सांत्वना देने और उनकी सहायता करने की उसकी योग्यता को कम नहीं कर पाई थी। उसकी प्रतिज्ञा ऐसी थी जिस पर वे कठिन से कठिन समय में भी भरोसा कर सकते थे।

एक सहायक की अपेक्षा
(14:16-18, 25, 26)

यीशु ने अपने चेलों को कई बार समझाया कि वह थोड़ी देर के लिए ''जा रहा'' है।[2] परन्तु उसने उनसे कहा कि उसके जाने से वे अनाथ नहीं होंगे (14:18)। अपनी जगह उसने उनके लिए एक ''सहायक'' भेजना था (14:16, 26)।[3] ''सहायक'' के लिए यूनानी शब्द का अर्थ है ''जो साथ-साथ आता है।'' न्यायालय में देखें तो, इसका अर्थ वकील होता है जो किसी की ओर से बात करता है। दूसरे स्थानों पर, इसका अर्थ कोई भी व्यक्ति हो सकता है जो आवश्यकता के समय सहायक हो। ये सभी शब्द पवित्र आत्मा के काम का वर्णन करते हैं (14:26) जिसे अपने जाने के बाद यीशु ने अपने चेलों के पास भेजना था।

यीशु की तरह पवित्र आत्मा भी ईश्वरीय है और उसे वस्तु के बजाय व्यक्ति के रूप में सम्बोधित किया जाना चाहिए। आज वह कलीसिया में (1 कुरिन्थियों 3:16) और व्यक्तिगत रूप से मसीही लोगों में (1 कुरिन्थियों 6:19) रहता है। वह सामर्थी है जो हमें मसीह के स्वरूप में बदलता है (2 कुरिन्थियों 3:18) और हमारे जीवनों में परमेश्वर के योग्य फल देता है (गलतियों 5:22, 23)। यीशु द्वारा चेलों से की गई प्रतिज्ञा को पूरा करते हुए, पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों के जीवनों में सांत्वना और सहायता का बहुत बड़ा स्रोत है। आत्मा हमारे साथ है, हमारे बीच में है, और हमारे अन्दर है, इसलिए शारीरिक रूप में यीशु के पृथ्वी पर हमारे साथ न होने के बावजूद हम आत्मिक ''अनाथ'' नहीं हैं।

लंदन की एक गली के किसी कोने में खड़े दो लोग आपस में बातें कर रहे थे, जिसमें एक समाचार रिपोर्टर ने जी. के. चेसटर्टन से पूछा, ''श्रीमान जी, मैं जानता हूं कि आप नये-नये मसीही बने हैं। क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूं?'' चेसटर्टन ने उत्तर दिया, ''पूछिए।'' उस व्यक्ति ने पूछा, ''यदि यीशु मसीह अचानक इसी समय आ जाए और आपके पीछे खड़ा हो, तो आप क्या करेंगे?'' चेसटर्टन का उत्तर था, ''वह तो खड़ा है।''

यीशु आज पवित्र आत्मा के रूप में हमारे साथ है। उसने हमें अकेले नहीं छोड़ा है अर्थात हम आत्मिक रूप से अनाथ नहीं हैं। प्रारम्भिक चेलों की तरह हमारे लिए भी यह सांत्वना का बहुत बड़ा स्रोत है, चाहे हम कितने भी कष्ट में क्यों न हों।

मानने के लिए एक आज्ञा
(14:15, 20, 21, 23, 24, 31)

सांत्वना की एक और बात यह है कि यीशु ने अपने चेलों को आज्ञाओं की एक शृंखला दी है। हो सकता है कि आज्ञाएं हमें सांत्वना देने वाली न लगें, परन्तु वे हमें इस बात की समझ अवश्य देती हैं कि परमेश्वर हमसे क्या अपेक्षा करता है। यह जानकर हमें आत्मविश्वास मिलता है।

अध्याय 14 में समय-समय पर, यीशु ने अपने चेलों को उसकी आज्ञाएं मानने के लिए कहा। कई लोगों को लगता है कि ऐसी भाषा प्रेम के विपरीत है। परन्तु यीशु ने कभी भी आज्ञा मानने और प्रेम को एक दूसरे से अलग नहीं माना। बल्कि उसने कहा, ''जिस के पास

मेरी आज्ञा है और उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है ...'' (14:21)। परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को उसकी आज्ञा मानकर ही दिखाया जा सकता है।

यीशु की नज़र में आज्ञाकारी होने का अर्थ क्रूस पर प्राण देना था (14:31)। अध्याय 13 से 19 में दर्ज उस लम्बी और परीक्षा वाली रात के बाद, यीशु गिरफ्तार हो गया था। अगले दिन जगत के पापों के लिए उसे क्रूस पर चढ़ाया जाना था। ऐसा करके उसने अपने चेलों को आज्ञाकारिता का महत्व न केवल बातों से बल्कि अपना ही उदाहरण देकर समझाया। परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को उसकी आज्ञा मानकर ही दिखाया जा सकता है।

सारांश

अपनी बात जारी रखते हुए, यीशु ने कहा था, ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे'' (14:27)। इस अध्याय का आरम्भ ''तुम्हारा मन व्याकुल न हो'' की पुकार और अन्त शान्ति की प्रतिज्ञा से होता है। शान्ति ऐसी चीज़ है जिसे हम सब प्राप्त करना चाहते हैं, परन्तु आम तौर पर इसकी व्याख्या करना कठिन है। बहुत बार, हम शांति की व्याख्या नकारात्मक अर्थ में करते हैं; हमारे विचार से शांति का अर्थ, युद्ध, पीड़ा, कष्ट और किसी प्रकार हानि न होना है। परन्तु यीशु ने शांति की व्याख्या इससे अधिक सकारात्मक अर्थ में की; इसका अर्थ परमेश्वर की उपस्थिति है। आप शांति को कैसे समझते हैं?

जो शांति यीशु देता है उसे कोई लुटेरा चुरा नहीं सकता, हत्यारा उसकी हत्या नहीं कर सकता, या आधी रात में टेलीफोन पर दुखद समाचार से वह समाप्त नहीं हो सकती। मसीह की शांति का अर्थ परमेश्वर की उपस्थिति है। उसकी शांति हमें उस ''भली स्त्री'' की तरह बना देती है जिसका वर्णन नीतिवचन 31:25 में किया गया है ''वह बल और प्रताप का पहरावा पहने रखती है, और आने वाले काल के विषय पर हंसती है।'' यह जानकर कि परमेश्वर हमारे साथ है, हम भी अनिश्चित भविष्य पर हंस सकते हैं।

जिस समय यीशु ने अपने चेलों को सांत्वना भरी ये बातें कहीं, उस समय उसकी मृत्यु के कारण उथल-पुथल और उन पर कष्ट आने वाला था। आज मेरे और आपके सामने ... हम नहीं जानते कि क्या होने वाला है, या जानते हैं? जीवन के अनिश्चित पथ पर चलते हुए, आइए अपने ''विश्वास की यात्रा'' में भी आगे बढ़ें। ऐसा करके, हम ''भविष्य पर हंस'' सकते हैं, क्योंकि हमें मालूम है कि यीशु ने आरम्भिक चेलों की तरह हमें भी किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार किया है!

पाद टिप्पणियां

[1]मैक्स लुकेडो, *टेल मी द सीक्रेट्स* (व्हीटन, Ill: क्रॉसवे बुक्स, 1993), 28-30. [2]देखिए यूहन्ना 13:33, 36;14:2. [3]''सहायक'' का अनुवाद ''counselor'' [सलाहकार] (NIV), ''comforter'' [सांत्वना देने वाला] (KJV), या ''advocate'' [वकील] (NRSV) भी हो सकता है।